नव भारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

अमेरिका की धरती से मानवता का संदेश

दुनिया में जब धर्म और पहचान के नाम पर टकराव बढ़ रहा हो, तब अमेरिका की धरती से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रमुख डॉ. मोहन भागवत का मानवता और सहअस्तित्व का संदेश महत्वपूर्ण है. 'वन वर्ल्ड, वन ह्यूमैनिटी' कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि यदि कोई हिंदू यह सोचता है कि भारत में मुसलमान नहीं होने चाहिए तो वह हिंदू नहीं हो सकता. यह कथन केवल किसी समुदाय के प्रति सद्भाव का संदेश नहीं है, बल्कि हिंदुत्व की उस व्यापक सांस्कृतिक अवधारणा को सामने रखता है, जिसमें मनुष्य की गरिमा, विविधता और सहअस्तित्व को केंद्रीय स्थान प्राप्त है.

मोहन भागवत ने 2018 के अपने उस संवाद का भी उल्लेख किया, जिसमें मुस्लिम भाइयों ने उनसे पूछा था कि हिंदू राष्ट्र की बात का अर्थ क्या मुसलमानों को भारत से बाहर करना है. उनका उत्तर था कि ऐसा सोचना हिंदुत्व नहीं है. इस स्पष्टीकरण का महत्व इसलिए बढ़ जाता है क्योंकि हिंदुत्व को लेकर देश और दुनिया में अलग-अलग धारणाएं बनाई जाती रही हैं. ऐसे में संघ प्रमुख द्वारा हिंदुत्व को मानवता और सभी पंथों के सम्मान से जोड़ना एक महत्वपूर्ण वैचारिक संदेश है.

भारत की सभ्यता का मूल चरित्र विविधता को स्वीकार करने वाला रहा है. यहां अनेक धर्म, पंथ, भाषाएं और संस्कृतियां सदियों से साथ-साथ विकसित हुई हैं. यही कारण है कि भागवत का यह कहना कि सभी रास्ते एक ही ईश्वर तक जाते हैं, भारतीय चिंतन की उस परंपरा की याद दिलाता है, जिसमें सत्य तक पहुंचने के अनेक मार्गों को स्वीकार किया गया है. विविधता को समाप्त करना नहीं, बल्कि उसे सम्मान देना ही भारत की सामाजिक शक्ति रही है.आज दुनिया के अनेक हिस्सों में धार्मिक कट्टरता, नस्ली असहिष्णुता और पहचान की राजनीति समाजों को बांट रही है. ऐसे समय में 'विविधता हमारी आंतरिक एकता की सजावट है' का विचार केवल भारत के लिए नहीं, पूरी दुनिया के लिए प्रासंगिक है. विविधता को सहन करने और उसे सम्मान देने में अंतर है. लोकतांत्रिक समाज की वास्तविक परीक्षा इसी बात से होती है कि वह अपने से अलग आस्था और विचार रखने वाले व्यक्ति के अधिकारों और गरिमा की कितनी रक्षा करता है. संघ के सेवा कार्यों का उल्लेख करते हुए संघ प्रमुख ने यह भी कहा कि जरूरतमंद की सहायता करते समय उसका धर्म नहीं देखा जाता और सेवा के बदले राजनीतिक लाभ या प्रसिद्धि की अपेक्षा नहीं की जाती. वास्तव में यही मानवता की कसौटी है. किसी व्यक्ति की पीड़ा उसके धर्म, जाति या पहचान से बड़ी होती है. संकट में खड़े व्यक्ति का हाथ थामना ही समाज को जोड़ने वाली सबसे प्रभावी शक्ति है.

अमेरिका जैसे बहुलतावादी देश में आयोजित अंतरधार्मिक सम्मेलन से आया यह संदेश भारत के लिए भी आत्ममंथन का अवसर है. भारत की एकता किसी एकरूपता में नहीं, बल्कि अनेकताओं के बीच बने विश्वास में है. बहुसंख्यक होने का अर्थ दूसरों के अधिकारों को कम करना नहीं और अल्पसंख्यक होने का अर्थ राष्ट्र की मुख्यधारा से अलग होना नहीं है. दोनों की साझी जिम्मेदारी भारत की सामाजिक एकता को मजबूत करना है.विश्व को आज धार्मिक श्रेष्ठता की बहस से अधिक मानव गरिमा की जरूरत है. ऐसे दौर में अमेरिका की धरती से दिया गया 'वन वर्ल्ड, वन ह्यूमैनिटी' का संदेश सीमाओं और संकीर्ण पहचानों से ऊपर उठने का आह्वान करता है. भारत की सांस्कृतिक दृष्टि यदि वास्तव में विश्व को दिशा देने वाली है तो उसका सबसे मजबूत आधार यही होगा कि रास्ते भले अलग हों, लेकिन मंजिल मानवता, सम्मान और सहअस्तित्व की हो.

विंध्य की डायरी

मंदाकिनी ने दिखाया रौद्र रूप चित्रकूट में बाढ़ का तांडव

डॉ. रवि तिवारी

विंध्य में भारी बारिश पिछले एक सप्ताह से हो रही है, जलभराव से जनजीवन बुरी तरह से प्रभावित है. चित्रकूट में मंदाकिनी रौद्र रूप में रही, जिससे समूचे चित्रकूट में बाढ़ का तांडव देखने को मिला. रामघाट का पुल बह गया, हाइवे पूरी तरह से कट गया और कई परिवारों की गृहस्थी बह गई. हालात बिगड़ने पर सेना को बुलाना पड़ा. एसडीईआरएफ-एनडीआरएफ ने मोर्चा सम्भाला. पानी के प्रचंड वेग ने सब कुछ नष्ट कर दिया. वर्ष 2016 के बाद प्रलयकारी बाढ़ चित्रकूट में देखने को मिली. राहत बचाव कार्य के बीच सैकड़ों लोगों को सुरक्षित बचाया गया, समूचा चित्रकूट टापू बन गया है. मंदाकिनी अपने खतरे के निशान से ऊपर बही, अब सवाल यह उठता है कि बाढ़ के कारण को क्या खोजा जाएगा और ऐसी आपदा से निपटने के लिये कोई एक्शन प्लान बनाया जाएगा ? बाढ़ के हालात को देखते हुए प्रदेश के मुखिया डॉ. मोहन यादव सभी कार्यक्रम निरस्त करते हुए दिल्ली से सीधे शनिवार की रात रीवा पहुंचे और रात में ही बाढ़ की समीक्षा की और सुबह चित्रकूट पहुंचकर जायजा लिया. साथ ही बाढ़ पीड़ित लोगों से शिविर में मिलकर ढांढ़स बंधाया और कहा कि संकट की इस घड़ी में सरकार उनके साथ खड़ी है. अतिवृष्टि से सीधी-सिंगरौली एनएच-39 पर यातायात बंद हो गया. खाखन पुल के ऊपर पानी बहने से आवाजाही बंद हो गई है. 13 साल से

निर्माणाधीन हाइवे का पुल आज तक नहीं बन पाया. अधूरा पुल होने के कारण पुराने पुल से आवागमन हो रहा था लेकिन पानी में वह भी डूब गया. रीवा में भी जलभराव की स्थित बनी हुई है.

टीआई को मंहगा पड़ा पंगा लेना- प्रतिबंधित नशीली कफ सिरप के खिलाफ प्रदेश भर में अभियान चलाया जा रहा है. रीवा में भी आइस्क्रीम ठेले में दिनदहाड़े प्रतिबंधित कफ सिरप पकड़ी गई, उसके बाद हंगामा शुरू हो गया. कार्यवाही की कीमत सिविल लाइन थाना प्रभारी को चुकानी पड़ी. कार्यवाही के विरोध में सिविल लाइन थाने भाजपा व्यापारी संघ के नेता बंशीलाल साहू पहुंचे और थाने के बाहर धरने पर बैठ गये. इस बीच गुस्से में टीआई विजय सिंह बघेल और नेता बंशीलाल साहू के बीच तीखी बहस हुई. टीआई ने आपा खोते हुए भला बुरा कह दिया, सिंघम छवि में आए टीआई साहब एफआईआर दर्ज करने तक की धमकी दे डाली. फिर क्या था तेजी से वीडियो वायरल हुआ, जिसके बाद शहर के व्यापारी लामबंद होकर आईजी से न्याय की गुहार लगाई. मामला तूल पकड़ते ही टीआई साहब को एसपी ने लाइन अटैच कर दिया. एक भाजपा नेता से पंगा लेना टीआई साहब को मंहगा पड़ गया.

पापा मुझे बचा लो यह लोग मुझे मार डालेंगे

रीवा के गांधी मेमोरियल अस्पताल में जननी की गूंजी चीख-पुकार हमेशा-हमेशा के लिये खामोश हो गई और अब सियासत शुरू हो गई है. सक्षम लोगों का एक बड़ा वर्ग इस मामले को दबाने में सक्रिय हो गया है. चिकित्सा जगत के स्थानीय संगठन भी अपनी एकजुटता का संदेश देना शुरू कर दिया है. बावजूद इसके लोगों के मोबाइल फोन में गूंज रही जननी की चीख अव्यवस्था के अमानवीय चेहरों को उजागर कर रही है. स्वास्थ्य मंत्री के गृह जिले में अस्पताल की बदहाल व्यवस्था पहले भी कई जान ले चुकी है. आखिर इसका जिम्मेदार कौन है? जांच रिपोर्ट सब फाइलों में दम तोड़ देती है. बैकुण्ठपुर निवासी कल्पना मिश्रा को प्रसव के लिये गांधी मेमोरियल अस्पताल में भर्ती कराया गया था. जहा घोर लापरवाही ने जच्चा-बच्चा की जान ले ली. कल्पना का वीडियो वायरल हुआ उसके देख और सुनकर हर कोई भावुक हो गया. कल्पना अपनी जान बचाने की गुहार लगा रही थी. पापा मुझे यहां से ले चलो मुझे यहां इलाज नही कराना, मुझे यह लोग मार डालेंगे..... मौत के मुंहाने पर खड़ी एक गर्भवती बेटी की यह आखिरी चीखें और उसे सांत्वना देते बेबस पिता का वीडियो हर किसी की रूह कंपा दिया. पिता ने डॉक्टरों को भगवान मान कर अपनी लाड़ली को समझाया कि कुछ नहीं होगा, बेटी इलाज करा लो. लेकिन कुछ देर बाद पिता को बेटी की लाश मिली, जच्चा-बच्चा दुनिया में नहीं रहे. भारी हंगामा और आक्रोश के बीच दो महिला डॉक्टर निलंबित और राज्य स्तरीय टीम मामले की जांच कर रही है. इस बीच कांग्रेस ने भी स्वास्थ्य मंत्री को जिम्मेदार ठहराते हुए इस्तीफा मांगा है.

गरीबी चुराने कोई नहीं आता !

अनिल त्रिवेदी

सर्वोदय दर्शन को समग्रता से समझने एवं सहजता से समझाने वाले तथा स्वाधीनता आंदोलन के सैनिक दादा धर्माधिकारी अपने संस्मरणों को सहजता से अभिव्यक्त करते हुए कहते हैं कि एक बार आदिवासियों के एक गांव में जाने का मौका हुआ. उनके पास कोई जगह नही थी. मकान में एक ही कमरा था. उसमें खिड़की नहीं थी. वहीं रोटी बनती थी. सारे मकान में धुआं था. कुछ मुर्गियां थी, बच्चे भी इधर-उधर खेलते थे. उन्होंने सोचा कि मुझे वहां सुलाना ठीक नहीं होगा. बगल में एक झोपड़ी थी, वहां मेरी खाट बिछा दी. हमने पूछा यह जगह आपके पास कहां से आयी? वह हमारा अपमान या मज़ाक नहीं करना चाहता था, पर उसने वस्तुस्थिति बतलायी कि हम इसमें सूअर रखते हैं. हमारे पास और कोई जगह नहीं थी. हमने इसे आज साफ कर लिया. मैंने कहा -खैर साफ कर लिया तो अच्छा ही किया. थोड़ी देर में हमें लगा कि यह व्यक्ति यहां सूअर रखता था. रात को कोई घुस आये तो क्या होगा? हमने पूछा-इसमें किवाड़ नहीं है? बोला -इसमें किवाड़ों की जरूरत नहीं है. क्यों? आसपास कोई चोर नहीं है? चोर तो बहुत है. तो फिर तुम्हारे घर में किवाड़ क्यों नहीं? बोला हम ऐसे भाग्यवान कहां कि हमारे घर में चोर आये?

> **विकास यात्रा में हम शहरी या विकसित बसाहट में सब कुछ यंत्राधारित करने की अंधी दौड़ में जुट गए हैं उससे हम सब की प्राकृतिक सोच समझ और जीवन का आनंद हमारे पास से निरन्तर दूर जाने की दिशा में बढ़ता जा रहा है. भौतिक समृद्धि और प्राकृतिक सम्पदा के सह सम्बन्ध को भूलकर आगे बढ़ने की दौड़ में हम सब हांफ रहे हैं. इसी से कभी कभी ऐसा लगता है कि हम विकसित सभ्यता के आदी मनुष्य अपने प्राकृतिक जीवन क्रम को खुद होकर लुप्त करने में लगे हुए हैं.**

अब यह बिल्कुल अनपढ़ मनुष्य कह रहा है. वह कह रहा है कि हमारा ऐसा भाग्य नहीं है. क्यों? भाग्य किसलिए चाहिए? तो कहता है-हमारे पास एक ही चीज हैं गरीबी और उसे चुराने वाला कोई नहीं. !

मैंने कहा-तब तो आपको पुलिस और फौज की जरूरत नहीं होती.

वह जवाब देता है कि पुलिस और फौज की हमें क्या जरूरत पड़ती होगी?

पुलिस वाला कभी नहीं आता तुम्हारे यहां? कहता है आता है. कब आता है?

आपकी घड़ी गुम हो जाये, खो जाय, तो खोजने के लिए हमारे मकानों में आता है. पुलिस और फौज किसलिए हैं?

बोला आपकी अमीरी को बचाने के लिए है और हमारी गरीबी को बचाने के लिए. वह दोनों की हिफाजत करतीं हैं.

आदिवासी मनुष्य की अपनी मौलिक दार्शनिक समझ होती है जिसे वे लोग ही समझ पाते हैं जो प्राकृतिक मानस के होते हैं सदा जीवन्त और भय मुक्त. इसी तरह आदिवासी अंचलों में जो बसाहट होती है वह भी इसी दृष्टि का विस्तार करती हैं. आदिवासी अंचलों में घरों की बनावट और बसाहट की अपनी मौलिक लोकदृष्टि होती हैं. आदिवासी अंचलों में मनुष्य केवल मनुष्य या परिवार या समाज के साथ ही नहीं रहता समूची प्रकृति की अंतहीन जीवन श्रृंखला के साथ सहजता से सहजीवन करता है. एक बार मैंने अलिराजपुर के अंदरूनी हिस्से के सघन जंगलों में देखा कि अधिकांश घर मिट्टी और लकड़ी के सुन्दर, सुरूचिपूर्णऔर आकर्षक संरचना के साथ मौजूद हैं.

निरक्षर लोगों ने बिना कागज़ पर कोई प्रारूप या रेखाकंन बनाये और बिना बड़े भौतिक संसाधनों को इस्तेमाल किए ही अपनी लोकपरम्परागत नजर और सहज समझ के समन्वय से स्थानीय संसाधनों से बनाये है. जब मैंने एक आदिवासी बुजुर्ग से उनकी बसाहट को लेकर यह जिज्ञासा प्रगट की कि आपके घरों में दरवाजे क्यों नहीं है? तो उन्होंने मुझे अपनी लोकदृष्टि से विनम्रतापूर्वक समझाते हुए कहा कि वकील साहब यह घर केवल हमारे परिवार के सदस्यों के लिए ही हम नहीं बनाते. हमारे साथ हमारी बकरी ,मुर्गी और गाय बैल भी हमारे जीवन एवं परिवार के सदस्य हैं.

आज भी अधिकांश आदिवासी अंचलों में स्वावलंबन और सहजीवन की अनोखी जुगलबंदी की मजबूती से खड़ी होकर मौजूद दिखाई देती हैं. आधुनिक जीवन शैली के आदी होते जा रहे विकसित शहरी सभ्यता के लोग, आदिवासी अंचलों की जीवन शैली के प्राकृतिक रूप स्वरूप और दर्शन को आत्मसात करने का आत्मविश्वास और उदात्त मानवीय मूल्यों को समझने के बजाय जाने अंजाने अपने आप ही प्रकृति से दूर जाते जा रहे हैं. इससे ऐसा आभास होता है कि विकसित मानव सभ्यता की दिशा सरलता से जटिलता की दिशा में निरंतर बढ़ती ही जा रही है.

बड़े लोगों को छूट, किसानों पर अन्याय

न्याय सभी के लिए समान होना चाहिए पर ऐसा नहीं होता. ऐसे बड़े उद्योगपतियों को जो सत्ताधारियों के करीबी माने जाते हैं, विशेष रियायत दी जाती है जबकि सामान्य लोगों व किसानों से मामूली कर्जवसूली के लिए बेहद अपमानजनक सख्ती की जाती है. नियम यह है कि यदि कर्ज लेने वाला रकम नहीं लौटाता तो वह रकम गैरेंटर से वसूली जाती है लेकिन इस नियम को ताक पर रखकर इनसॉल्वेंसी ट्रिब्यूनल ने जी ग्रुप के संस्थापक सुभाष चंद्रा के 22 हजार करोड़ के लोन को सिर्फ 6.5 करोड़ में निपटाने के प्लान को मंजूरी दे दी. इस वजह से कर्ज देने वाले बैंकों व वित्तीय संस्थानों को अपनी 99.97 प्रतिशत बकाया रकम का नुकसान झेलना पड़ेगा. यह प्रकरण इस प्रकार है. कुछ कंपनियों ने इंडियाबुल्स हाउसिंग फाइनेंस से 726 करोड़ का लोन लिया जिसके पर्सनल गैरेंटर सुभाष चंद्रा थे. जब कंपनियों ने रकम नहीं लौटाई तो इंडियाबुल्स ने सुभाष चंद्रा के खिलाफ कानूनी कार्रवाई शुरू की. एनसीएलटी ने कर्ज का बहुत कम रकम में सेटलमेंट कर दिया. इसकी प्रतिक्रिया होनी ही थी. कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने एनसीएलटी को 'नेता-कंपनी लूट ट्रिब्यूनल' बताते हुए कहा कि कोई वेतनभोगी एक किश्त न भर पाए तो वसूली के लिए घर पर बैंक के गुंडे आ धमकते हैं. किसान 50 हजार का कर्ज न लौटाए तो जमीन नीलाम हो जाती है लेकिन चुनिंदा मित्रों के लिए बैंक का पैसा निजी संपत्ति है. चाहे कितना भी निकालो और जो मर्जी हो चुकाओ. सुभाष चंद्रा को दी गई भारी राहत पर शराब कारोबारी व किंगफिशर एयरलाइंस के पूर्व प्रमोटर विजय माल्या ने कहा कि मुझसे 6,203 करोड़ के कर्ज के बदले अब तक 14,100 करोड़ रुपए वसूले जा चुके हैं.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

विधायक की कार धो रही दमकल, इसे लेकर क्यों इतनी हलचल

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, मध्यप्रदेश के सिंगरौली से बीजेपी विधायक की निजी इनोवा कार को फायर ब्रिगेड ने धोया. होजपाइप की तेज धार से सारी धूल-मिट्टी साफ होकर गाड़ी चमचमा उठी. इसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया, जिससे प्रशासनिक हलकों में हड़कंप मच गया.' हमने कहा, 'इसमें हड़कंप या हलचल की कौन सी बात है. गाड़ी किसी ऐसे-गैरे की नहीं बल्कि विधायक की थी. उसकी धुलाई पर क्यों ऐतराज होना चाहिए? अब हर समय तो आग लगती नहीं, जिसे बुझाने दमकल कर्मी जाएं. उन्हें खाली रखने की बजाय उनसे कुछ और काम लिए जा सकते हैं जैसे कि नेताओं की गाड़ियां धुलवाना ! यह श्रम शक्ति का सदुपयोग है. इससे पानी की धार मारने की कुशलता व प्रैक्टिस बढ़ती है. इसे एक तरह का अभ्यास या डेमो मान लीजिए. सफेद या काली कार पर धूल जल्दी जमती है इसलिए

उसे धोना आवश्यक है. दमकल कर्मियों से दमदारी और दिलदारी से कार को स्वच्छ कर दिया.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, ऐसा कौन सा प्रमाण है कि विधायक ने दमकल कर्मियों से कार धोने को कहा ? विधायक रामनिवास शाह ने कहा कि कोई भी विधायक खुद अपनी कार नहीं धोता. यह काम ड्राइवर का होता है. दमकल को ठीक करने और पानी भरने के लिए नगर निगम आयुक्त के आवास के पास लाया गया था.' हमने कहा, 'गाड़ी की सफाई को लेकर इतनी सफाई देने की क्या जरूरत है? हो सकता है कि विधायक के प्रति श्रद्धा रखने वाले दमकल कर्मियों ने बिना कहे स्वयंस्फूर्ति से उनकी कार धो डाली होगी. यह उनका विधायक के प्रति सम्मान और कर्तव्य परायणता है. अच्छा हुआ कि उन्होंने होस पाइप से नेता को नहलाया नहीं!' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, पानी की तेज धार पत्थर जैसी लगती है. दिल्ली के जंतरमंतर के अलावा अन्य राज्यों में भी प्रदर्शनकारी युवाओं पर वाटर कैनन से पानी की तेज धार छोड़ी गई लेकिन इतने पर भी छात्रों ने सिर पर शैम्पू लगाकर इस धार में खुशी से नहा लिया और रेनडान्स किया. यह है जेन जी का जलवा. घर के नलों में पानी की धार पतली रहती है लेकिन दमकल की धार हमेशा बेहद मोटी और फोर्सफुल होती है.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12364 -डॉ. सागर खादीवाला

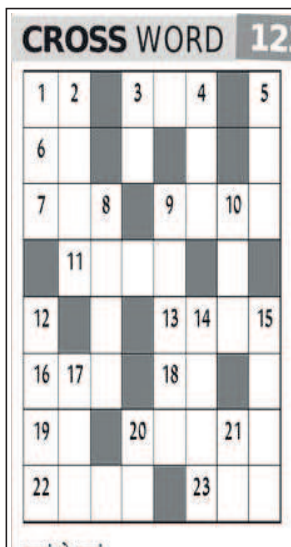

बाएं से दाएं
1. वह मनुष्य जिसके पैर टेढ़े हों, दुर्गा 3. नमकीन, खारा, सुंदर 6. वनौषधि, बूटी 7. पशुओं के चरने के लिए छोड़ी हुई भूमि, चरी 9. वह शासन प्रणाली जिसके द्वारा जनता ही अपने विधान-निर्माण करने वाले प्रतिनिधि तथा प्रधान शासक चुनती है (रिपब्लिक) 11. सुंदरी, सुकुमारी, नाजुक 13. बड़ा हाथी (सं.) 16. नाम से प्रसिद्ध, नाम धारण करने वाला 18. नाथ, स्वामी, पहिए का छेद बंधन 19. तलछट, तेल की कीट 20. बिना लगान भूमि का मालिक 22. अंत:पुर, रानियों के रहने का महल

23. पहाड़ के नीचे का वह मैदान जहां तरी रहती है

ऊपर से नीचे
1. कंकाल ठठरी, पिंजरा, पीला (सं.) 2. गाड़ियां खड़ी करने का स्थान 3. वह, जिस पर निशाना लगाया जाए, उद्देश्य 4. दो मात्राओं का एक गण (सं.) 5. स्वाधीन, आजाद 8. निकट, करीब, पास 9. जाड़े से (शरीर में) कंपकंपी होना 10. सितार की तरह का एक बाजा, तानपूरा 12. स्नानगृह 14. झंझट, आपत्ति 15. जबरदस्ती 17. कामदेव (सं.) 20. 'यह' शब्द का रूप जो विभक्ति लगने पर हो जाता है 21. ईशान का एक बादशाह जिसे सिकंदर ने विजित किया था, बादशाह, आका

Solution 12363

स	ह	ल	■	च	क	म	क
ह	ल	वा	इं	■	चं	द	र
ला	■	■	मा	न	ध	न	■
ना	मां	क	न	■	■	बा	द
■	सा	म	■	प	रि	ण	य
म	हा	रा	ज	■	श्ता	■	नी
दा	री	■	त	स	■	ज	य
री	■	म	न	भा	व	न	■

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में व्यापार में सुधार होगा. स्त्री पक्ष से लाभ होगा. पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा. नौकरी में स्थिति अनुकूल रहेगी. आर्थिक कमी के कारण योजना अपूर्ण रहेगी. मनोरंजन में व्यय होगा. वर्ष के मध्य में अतिथि व प्रियजनों के कारण व्यस्तता रहेगी. नई योजना केबारे में विचार विमर्श होगा. संतान सुख मिलेगा. प्रशासनिक अधिकारियों का सहयोग रहेगा. वर्ष के अन्त में व्यवधान आ सकता है. नये व्यक्ति से विवाद हो सकता है. मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को प्रशासनिक अधिकारियों का सहयोग मिलेगा. संतान पक्ष का सुख प्राप्त होगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को व्यापार व्यवसाय में सुधार होगा. स्त्री पक्ष से लाभ होगा. सिंह राशि के व्यक्तियों की स्थिति सामान्य रहेगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों कार्य में व्यवधान आ सकता है. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को नई योजना पर विचार विमर्श होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक शांत स्वाभिमानी अपने कार्यो के प्रति सजग रहने वाला सक्रिय होगा, इसको जब क्रोध आयेगा, तो शीघ्र शांत नहीं होगा. अपनी मनमर्जी का मालिक होगा. अन्याय को कभी सहन नहीं करेगा. शिक्षासाधारण होगी. स्वतंत्र व्यवसाय करेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

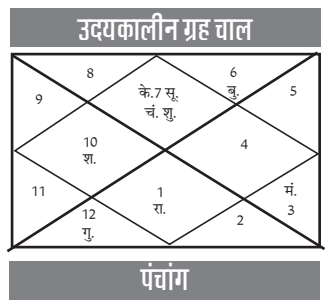

पंचांग

रा.मि. 09 संवत् 2083 भाद्रपद कृष्ण तृतीया चन्द्रवासरे दिन 8/28, रेवती नक्षत्रे रात 4/5, गण्ड योगे रात 3/28, विष्टि करणे सू.उ. 5/43, सू.अ. 6/17, चन्द्रचार मीन रात 4/5 से मेष, पर्व- संकष्टी बहुला श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, शु.रा. 12,2,3,6,7,10 अ.रा. 1,4,5,8,9,11 शुभांक-5,7,1.

व्यापार भविष्य

भाद्रपद कृष्ण तृतीया को रेवती नक्षत्र के प्रभाव से गुड़, खांड़, शक्कर, में तेजी का योग है. गेहूँ, जौ, चना, आदि अनाजों में नरमी रहेगी. वायदा विचार आज पिछले दिन के भाव ऊँचे रहेंगे. उसी में तेजी होगी. भाग्यांक 3633 है.

मेष- धन संबंधी मामले में सावधानी पूर्वक निर्णय करें. रोगी की चिन्ता रहेगी. व्यापार व्यवसाय अच्छा चलेगा.

वृषभ- मित्रों का साथ लाभकारी रहेगा. मानसिक सुख शांति रहेगी. आय भी संतोषजनक रहेगी.

मिथुन- धार्मिक आस्था बढ़ेगी. पिछले अनुभवों से सबक लेकर वृषभे बढ़ें. साहसिक कार्य बनेगा.

कर्क- जोखिम के कार्यो से दूर रहें. बातचीत में नरमी बरतें. किसी परीक्षा में सफलता मिलेगी.

सिंह- सही वक्त पर फैसला लेने से नुकसान होगा. भौतिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी. नया कार्य मिलने का योग है.

कन्या- नौकरी में रहे व्यक्ति नये विकल्पों की तलाश में रहेंगे. मनोबल बना रहेगा. दूर की यात्रा हो सकती है.

तुला- नये सौदे व्यापार में मजबूती प्रदान करेंगे. व्यापारिक लेनदेन में सफलता मिलेगी. कार्यो का समाधान होगा.

वृश्चिक- आय के नये साधन जुड़ेंगे. कामकाज की व्यस्तता बढ़ेगी. समय का ध्यान रखें. साहस बना रहेगा.

धनु- पारिवारिक आयोजन प्रसन्नतादायक रहेगा. लक्ष्य की अधिकता रहेगी. अनावश्यक कार्यो को टालें.

मकर- कार्यस्थल पर व्यवस्था बनाये रखने के लिये सख्ती रखना पडेगी, जिससे सहयोगी नाराज होंगे.

कुम्भ- प्रतिभा के बल पर कार्यक्षेत्र में अलग पहचान बनाने में सफलता मिलेगी. पुराना कार्य निपटेगा.

मीन- खर्च की अधिकता से कर्ज लेना पड़ सकता है. पारिवारिक यात्रा होगी. कोई कामकाज विशेष होगा.

SUDOKU 7496

2	9			5				4
4			2		7		8	
	1	6		8				3
8		5		9				7
3	6			2			1	9
1				3		5		2
5				7		6	3	
	3		1		8			5
9				6			2	1

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो, इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7495

7	8	1	6	9	4	2	5	3
2	6	4	5	3	6	1	7	9
5	3	9	1	2	7	4	6	8
9	5	8	7	4	1	3	2	6
1	2	3	9	5	6	7	8	4
4	7	6	3	8	2	9	1	5
3	9	7	2	6	5	8	4	1
6	4	2	8	1	9	5	3	7
8	1	5	4	7	3	6	9	2